अध्याय 11

जातियों का तितर बितर होना

अध्याय 11 का प्रथम भाग बाबुल की मीनार के विषय में बातें करता है। जलप्रलय के बाद घमंडी लोगों ने एक मीनार बनाने का प्रयास किया और अपने लिए नाम कमाना चाहा (11:1-4)। परंतु परमेश्वर ने उनके इस योजना को उनके भाषा में गड़बड़ी पैदा करने के द्वारा झटका दिया और उन्हें धरती पर तितर बितर कर दिया (11:5-9)। इस अध्याय के दूसरे भाग में तेरह और उसके तीन पुत्रों के नाम से प्रारंभ होकर, शेम की वंशावली पायी जाती है (11:10-32)। उनमें से एक पुत्र अब्राहम था जिसके द्वारा परमेश्वर इस संसार को अपना अनुग्रह प्रदान करने पर था।

अपना नाम कमाने के लिए एक बड़े मीनार का निर्माण (11:1-4)

[1]सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी। [2]उस समय लोग पूर्व की और चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उस में बस गए। [3]तब वे आपस में कहने लगे कि आओ; हम ईंटें बना बना के भली भाँति आग में पकाएं और उन्होंने पत्थर के स्थान में ईंट से, और चूने के स्थान में मिट्टी के गारे से काम लिया। [4]फिर उन्होंने कहा, आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।

संरचना, शैली, भाषा और शब्दों के प्रयोग के अनुसार, बाबुल की मीनार का वृतांत, एक सर्वोत्तम कहानी वर्णन करने का अनूठा उदाहरण है। नूह और जलप्रलय से भिन्न, पश्चिम एशिया का कोई भी लेख अभी तक ऐसा नहीं मिला है जो बाइबल के बाबुल की मीनार के वृतांत के समतुल्य हो। इसका सबसे नज़दीकी कहानी, प्राचीन मेसोपोटामिया के लेख *एनुमा एलिस* या द *क्रिएशन एपिक* में पाया जाता है। यह देवताओं द्वारा बाबुल और इसका महान मंदिर मीनार ("स्टेज टावर" या ज़िगुरात) के निर्माण के संबंध में है, जिसमें देवताओं के राजा, मारदूक का सिंहासन पाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसकी ऊँचाई स्वर्ग तक थी जो उसकी वेदी थी और देवी देवताओं के लिए उत्सव का स्थान था, जहाँ वे नए वर्ष के उत्सव के समय खाते पीते तथा मौज मस्ती एवं विश्राम करते थे।[1]

इसके अलावा, सुमेर का अभिलेख[2] एक ऐसे समय की ओर संकेत करता है जब सभी लोगों ने एक ही भाषा बोली होगी या फिर बोलेंगे, लेकिन इस विषय पर कोई भी सम्मति नहीं हो पाई है कि क्या मानव जाति को एक सामान्य भाषा, धूमिल इतिहास के पन्नों का कोई अनुभव था या फिर आने वाले भविष्य में इसकी अपेक्षा की जा सकती है। यह इस पर निर्भर करता है कि सुमेर के अभिलेख का कैसा अनुवाद किया जाता है, भाषा के विभिन्नता के विषय में यह कहा जाता है कि या तो यह दो प्रतिस्पर्धा देवताओं, एनलील और एन्की के मध्य दुश्मनी के कारण हुआ है या फिर देवताओं के प्रति वह आक्रामक हुआ क्योंकि इसने मनुष्यों को महान देवता एनलील की आराधना करने से रोका।[3]

ये दोनों पाठ बाइबल के वृतांत से बहुत भिन्न हैं। बाबुल के कहानी के अनुसार देवताओं ने एक वर्ष तक ईंट बनाईं और तब उन्होंने अपने उत्सव तथा विश्राम के लिए मीनार बनाया। उत्पत्ति के अनुसार, मनुष्यों ने ईंट बनाईं और नाम कमाने और एकता बनाए रखने के लिए उन्होंने व्यर्थ ही मीनार बनाया। यह मीनार की कथा स्पष्ट रूप से मनुष्यों का परमेश्वर और मनुष्य के मध्य दूरी कम करना था ताकि वे अपनी बड़ाई करें और संभवतः अपने आपको बचा सकें। इससे बढ़कर, उत्पत्ति से यह स्पष्ट है कि भाषा की गड़बड़ी एक सच्चे परमेश्वर की ओर से न्याय था, न कि यह देवताओं के मध्य प्रतिस्पर्धा के कारण हुआ। भाषा में गड़बड़ी, मनुष्य के घमण्ड एवं जलप्रलय के पश्चात मनुष्य का समस्त पृथ्वी में न फैलने की ईश्वरीय आदेश का पालन न करने के कारण ईश्वरीय दण्ड था (9:1, 7)।

आयत 1. यह अध्याय **सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी** वाक्यांश से प्रारंभ होता है; किंतु अध्याय 10 तीन बार यह बताती है कि मानवजाति अनेक भाषाएं बोलती थी (10:5, 20, 31)। जैसे कि हमने पहले भी यह देखा था कि येपेत, हाम, शेम की वंशावली चुनी हुई थी न कि वह व्यापक थी। येपेत और हाम की वंशावली क्रमशः तीन और चार पीढ़ियों तक वर्णित है जबकि शेम की वंशावली छः पीढ़ियों तक पायी जाती है।

प्रथम दो वंशावलियों के अंत के सारांश वक्तव्य को वैसे ही समझा जाना चाहिए जैसे शेम की वंशावली का सारांश वक्तव्य। पिछली वंशावली यह बताती है कि पेलेग के दिनों में "पृथ्वी बंट गई थी" (10:25) और यह बाबुल की मीनार के बाद की घटना समझी जानी चाहिए जहाँ विभिन्न क्षेत्रों में लोग फैले हुए थे। लेखक इस वंशावली के सारांश, पेलेग के वंशावली के बाद शेम के वंश के अतिरिक्त नामों का वर्णन "उनके परिवारों" और "उनके भाषाओं" के आधार पर करता है (10:21, 31)।

स्पष्ट रूप से लेखक का उद्देश्य इस बात का सटीक तिथिबद्ध वृतांत देना नहीं है कि कब येपेत और शेम के वंशों ने अलग अलग भाषाएं बोली। वह दी गई वंशावली के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचता है - हालांकि कई वंशावलियों को इसमें शामिल किया गया है - नूह के पुत्रों को उनके परिवारों, भाषाओं, क्षेत्रों

और जातियों के आधार पर पहचाना गया है। नूह के पुत्रों की वंशावली का वर्णन करने के पश्चात, लेखक बाइबल की कथा को जारी रखता है।

आयत 2. जलप्रलय के पश्चात, नूह के संतान बढ़ने लगे और वे **पूर्व कि ओर चलने लगे**। "पूर्व" מִקֶּדֶם *(मिक्डेम)* का अनुवाद अलग अलग तरीके से किया गया है: जैसे "पूर्व की ओर," "पर्वाभिमुख" (NJB), "पूर्व को," "पूरब की ओर" (NLT), "पूर्व से," "पूर्व से" (KJV; NRSV; ESV), और "पूर्व में," "पूरब में" (NAB; NEB; REB)। इस अनुच्छेद में NIV इस शब्द का सटीक अर्थ समझने का उदाहरण देता है: यह मूल पाठ में इसका अनुवाद "पूर्व की ओर" करता है लेकिन अपने फुटनोट में इसका दूसरा संभावित अर्थ "पूर्व से" और "पूर्व में" भी करता है। इस इब्रानी शब्द का "पूर्व की ओर" अनुवाद, उत्पत्ति 13:11 के अनुवाद के अनुरूप है, जहाँ लूत ने केन्द्रीय पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर "पूर्व की ओर यात्रा" करके सदोम में बसेरा किया।[4]

यह और भी अधिक संभावित अनुवाद है क्योंकि **शिनार देश** का दूसरा नाम बाबुल भी है।[5] यह अरारात पहाड़ी के दक्षिण की ओर है जहाँ नूह का जहाज़ टिका था। इस क्षेत्र से उतरकर नूह का परिवार मेसोपोटामिया के घाटी में **बस गया** था। स्पष्ट रूप से वे पूर्व (दक्षिण पूर्व) की ओर बाबुल के क्षेत्र में गए और वहाँ के मैदानी क्षेत्रों में बस गए। लेखक के दृष्टिकोण से, जो कनान या कनान के निकट किसी स्थान पर है, शिनार का पूरा क्षेत्र जहाँ नूह का घराना बस गया था, पूर्व दिशा की ओर पड़ता था।

आयत 3. यह आयत लोगों के उस योजना पर रोशनी डालता है जिसमें उन्होंने मीनार बनाने की योजना बनाई। उस देश में जहाँ पत्थर दुर्लभ था, उन्होंने एक दूसरे को उत्साहित कर **ईंट बनाकर उसे कठोर करने के लिए भट्ठी की आग में पकाने की ठानी**। उन्होंने चूने के स्थान पर मिट्टी के गारे का प्रयोग किया क्योंकि यह **दजला** और हिद्देकेल घाटी में आसानी से उपलब्ध था। मूल पाठ यह भी बताता है कि उन्होंने कठोर किए गए "ईंटों" को **पत्थर** के स्थान पर प्रयोग किया। यह साधारण अधपके ईंट जो प्राचीन दक्षिण पूर्व की कछारी घाटी में घर और दूसरे व्यक्तिगत भवन बनाने के लिए प्रयोग किए जाते थे, उससे कहीं अधिक मज़बूत था।

आयत 4. फिर से लोगों ने एक दूसरे को उत्साहित कर उस परियोजना में जुट गए कि **एक नगर और एक गुम्मट बना लें**, **जिसकी चोटी आकाश से बातें करे**। इस भवन की परियोजना को एक बड़े नगर, मज़बूत चारदीवारी वाली मीनार के स्थापना के रूप में देखा जाता है, जो लोगों को शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करेगा। "मीनार" के लिए इब्रानी शब्द מִגְדָּל *(मिग्डाल)* का प्रयोग बाद में ऐसे ही उद्देश्य के लिए किया गया है (न्यायियों 8:9, 17; 9:46-52; भजन 48:12; 61:3; यहेज. 26:4, 9)। जहाँ तक हम जानते हैं, नूह के सभी संतान इस परियोजना में शामिल थे। क्योंकि जलप्रलय के पश्चात कोई भी नहीं बचा था तो संभवतः नूह के संतान अपने लिए कोई सुरक्षा दीवार का निर्माण नहीं कर रहे थे।

बाबुल का मीनार संभवतः प्राचीन बाबुल का सीढ़ीनुमा ज़िगुरात रहा होगा। यह न तो कब्र था और न ही प्राचीन मिस्र का पिरामिड। स्पष्टतया यह एक मंदिर रहा होगा। प्राचीन मेसोपोटामिया के लोग ज़िगुरात को स्वर्ग तथा पृथ्वी को जोड़ने वाले कड़ी के रूप में देखते थे। उस साम्राज्य का राजा, नव वर्ष के दिन, मंदिर के सीढ़ियों से कंगूरे पर चढ़कर, जब वह मुख्य देवता के हाथों से आलिंगन करता था तो लोग यह मानते थे कि वह देवता से अपने राज्य के लिए **आने वाले वर्ष में शांति, खुशहाली और आशीष प्राप्त करता है।**

प्राचीन लेख यह बताते हैं कि बाबुल का ज़िगुरात एक बहुत बड़ा ढांचा था। ईसा पूर्व पाँचवीं सदी का इतिहासकार, हिरोदितुस, यह बताता है कि मीनार के आठ चबूतरे थे।[6] इसकी ऊँचाई की गणना लगभग दो से तीन सौ फुट की थी। इस प्रकार का अनुमान अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है क्योंकि कालांतर के मंदिर की मीनार इतनी ऊँची थी तो मूल बाबुल की मीनार इससे कहीं कम ऊँची रही होगी। वास्तव में, बाइबल के वृतांत के अनुसार इसका आकार मायने नहीं रखता है; लेखक के लिए इस मीनार का निर्माण का उद्देश्य मायने रखता है। लोग न केवल परमेश्वर के साथ चालाकी दिखाना चाहते थे बल्कि वे अपना **नाम कमाना** चाहते थे **ताकि उन्हें सारी पृथ्वी पर फैलना न पड़े।**

एक बार फिर लोगों के इस प्रयास में घमंड, उत्साहित करने वाला कारक बनता है कि वे इस भवन परियोजना को समाप्त करने के द्वारा अपना "नाम कमाएंगे।"[7] उन्होंने स्पष्टतया यह माना कि वे स्वर्ग और पृथ्वी की दूरी को पाट लेंगे और अपनी उद्धार स्वयं सुनिश्चित कर लेंगे और अपने हाथों के कार्य से परमेश्वर को प्रसन्न करके आशीष प्राप्त कर लेंगे।

अनेकता का बीज प्राचीन समाज में पहले से ही व्याप्त था; संभवतः उन्होंने यह सोचा होगा कि उनकी यह उपलब्धि एक गोंद के समान कार्य करेगा कि वह उन सबको एक बार फिर से एकता के सूत्र में बांधेगा। यह सत्य है कि परमेश्वर हमेशा ही अपने लोगों के मध्य सच्ची एकता चाहता है, वह नहीं चाहता था कि नूह के संतान संगठित होकर इस प्रकार के भवन निर्माण परियोजना में शामिल हों। स्वर्ग और पृथ्वी का सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह जानता था कि मनुष्य का हृदय बुराई का आदी है (6:5)। ये लोग उससे बलवा करने वाले हैं क्योंकि जलप्रलय के पश्चात वे एक ही स्थान पर बसकर उसके दी आज्ञा - "फूलो-फलो और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ" (9:1) का पालन नहीं कर रहे थे।

मनुष्य के घमण्ड के कारण परमेश्वर का दण्ड (11:5-9)

[5]जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे; तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया। [6]और यहोवा ने कहा, मैं क्या देखता हूं, कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जितना वे करने का यत्न करेंगे, उस में से कुछ उनके लिये अनहोना न होगा। [7]इसलिये आओ, हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें, कि वे

एक दूसरे की बोली को न समझ सकें। [8]इस प्रकार यहोवा ने उन को, वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया; और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया। [9]इस कारण उस नगर का नाम बाबुल पड़ा; क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, सो यहोवा ने वहीं डाली, और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।

आयत 5. यह आयत कहानी में एक बड़ा फेर बदल लाता है। दृश्य अब पृथ्वी से स्वर्ग की ओर चला जाता है और भाषा व्यंग्यात्मक तथा गैर शाब्दिक हो जाती है। घटना का वृतांत इस प्रकार है कि **जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे; तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया।** इस वक्तव्य का शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जा सकता है क्योंकि परमेश्वर समय या स्थान तक सीमित नहीं है (भजन 139:7-12)। लोग क्या कर रहे हैं उसको वह देखता और जानता है (नीति. 15:3; यिर्म. 23:24; इब्रा. 4:13)। बाबुल के लोगों ने एक गुम्मट (मीनार) बनाने की ठान ली थी जिसकी ऊँचाई स्वर्ग तक पहुँचती थी; फिर भी उनका यह प्रयास बहुत छोटा और परमेश्वर की दृष्टि में निकृष्ट था, वह प्रतीकात्मक रूप से पृथ्वी के निकट "उतर आया" कि "देखें" धरती पर क्या हो रहा है।

आयत 6. यहोवा के मन में जो बात थी वह इस वाक्यांश से स्पष्ट हो जाता है, **"सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है।" उसने देखा कि उन्होंने ऐसा ही काम भी आरंभ किया है।** इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि परमेश्वर ने उन्हें ऐसा ही करने दिया तो **उनके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं होगा।** इसका तात्पर्य यह नहीं है कि परमेश्वर उनकी ताकत तथा ज्ञान से डरा हुआ था बल्कि उसकी चिंता तो अपने बच्चों के लिए एक प्रेमी माता पिता के समान - न केवल वर्तमान के लिए बल्कि उनके भविष्य के लिए भी है। वह जानता था कि यदि उन्हें उनके घमण्डी मार्ग में आगे बढ़ने दिया गया तो वे जलप्रलय पूर्व स्थिति में पहुँचकर अपनी ही विनाश का कारण ठहरेंगे। इस अनुच्छेद में जिस भाषा प्रयोग किया गया है वह अदन की वाटिका में प्रयोग की गई भाषा के समान है जहाँ उसने यह कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है: इसलिये अब ऐसा न हो, कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे" (3:22)। पतित संसार में पाप की अवस्था में सदा जीवित रहना, पृथ्वी पर नरक का अनुभव करने जैसा है। परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के द्वारा यह निश्चित किया कि वह मनुष्य को ऐसा दर्दनाक स्थिति में नहीं छोड़ेगा।

आयतें 7, 8. परमेश्वर का वचन, "**इसलिए आओ, हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें,**" लोगों का वह निर्णय कि "आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट [मीनार] बना लें" (11:4) को फेर देता है। फिर, यहोवा का वक्तव्य, अदन की वाटिका के समान है, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है" (3:22)। उनकी घमण्डी महत्वाकांक्षा को तोड़ने के लिए, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर निकाला और वहाँ उसने "जीवन

के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करुबों को, और चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया" (3:24)। उत्पत्ति 3:22 में प्रयोग किया गया बहुवचन सर्वनाम "हम," परमेश्वर और उसके करूब (3:24) को संयुक्त रूप से संबोधित किया है; यहाँ परमेश्वर स्पष्ट रूप से अपने स्वर्गीय (दूतों की) सभा को संबोधित कर रहा है जिसमें करूब भी शामिल हैं (टिप्पणी देखें 1:26; 3:22)। संभवतः परमेश्वर इसी स्वर्गीय (दूतों की) सभा को 11:7 में भी संबोधित कर रहा होगा कि वे बाबुल के गुम्मट (मीनार) के बनाने वालों के संदर्भ में आने वाले ईश्वरीय न्याय के लिए तैयार रहें। उनके भाषा में गड़बड़ी लाने के द्वारा परमेश्वर ने उनके लिए यह असंभव कर दिया कि वे एक दूसरे को न समझ सकें। इसलिए, उन्होंने इस परियोजना को त्याग दिया, उन्होंने **उस नगर को बनाना छोड़ दिया और उन्हें वहाँ से सारी पृथ्वी पर फैला दिया**।

आयत 9. लेखक ने इस कहानी का सारांश धर्मवैज्ञानिक पद्धति से किया जिसमें शब्दों का खेल पाया जाता है वास्तव में जो एक मौखिक व्यंग्य है: **बाबुल** निवासियों के लिए "बाबुल" בָּבֶל *(बाबेल)* का अर्थ "परमेश्वर का द्वार"[8] है; जबकि बाइबल के लेखकों ने एक जाना पहचाना शब्द "बाबेल" का प्रयोग कर उसी से मिलता जुलता इब्रानी शब्द בָּלַל *(बालाल)* प्रयोग किया है जिसका अर्थ बाबुल[9] है। गुम्मट (मीनार) के बनाने वालों की यह इच्छा कि यह उनकी योजना की पूर्ति का द्वार होगा और इस योजना को पूरा करने में परमेश्वर ने जब अड़ंगा डाला तो लेखक ने यह इशारा किया कि यह गुम्मट (मीनार) विडम्बनावश एक **गड़बड़ी** का द्वार बन गया। इस नास्तिक योजना के परिणामस्वरूप सभी मानव जाति के **भाषा** में गड़बड़ी आई। प्राचीन बाबुल के लोग अपनी योजना को पूरा करने में असफल रहे और **यहोवा ने उन्हें पृथ्वी भर में फैला दिया**।

शेम का वंशागत परिवार (11:10-26)

[10]शेम की वंशावली यह है। जल प्रलय के दो वर्ष पश्चात जब शेम एक सौ वर्ष का हुआ, तब उसने अर्पक्षद को जन्म दिया। [11]और अर्पक्षद के जन्म के पश्चात शेम पांच सौ वर्ष जीवित रहा; और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई। [12]जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का हुआ, तब उसने शेलह को जन्म दिया। [13]और शेलह के जन्म के पश्चात अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [14]जब शेलह तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा एबेर का जन्म हुआ। [15]और एबेर के जन्म के पश्चात शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [16]जब एबेर चौंतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा पेलेग का जन्म हुआ। [17]और पेलेग के जन्म के पश्चात एबेर चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [18]जब पेलेग तीस वर्ष को हुआ, तब उसके द्वारा रू का जन्म हुआ। [19]और रू के जन्म के पश्चात पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां

उत्पन्न हुई। [20]जब रू बत्तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा सरूग का जन्म हुआ। [21]और सरूग के जन्म के पश्चात रू दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [22]जब सरूग तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा नाहोर का जन्म हुआ। [23]और नाहोर के जन्म के पश्चात सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [24]जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा तेरह का जन्म हुआ। [25]और तेरह के जन्म के पश्चात नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। [26]जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ, तब तक उसके द्वारा अब्राहम और नाहोर और हारान उत्पन्न हुए।

बाबुल की गुम्मट (मीनार) का वृतांत, उत्पत्ति के प्रथम भाग का सारांश नहीं है। यदि ऐसा होता तो प्रथम भाग, मनुष्य के पाप, घमंड और असफलता की एक कड़वी यादगार के समान समाप्त होता। बल्कि, इस पुस्तक के आरंभिक अध्यायों के समान, परमेश्वर का अनुग्रह उसके न्याय के मध्य भी था। नूह के वंशजों के तितर बितर होने और भाषा में गड़बड़ी के पश्चात, शेम की दूसरी वंशावली प्रस्तुत की गई है जिसमें मानव जाति के लिए एक आशा है। अध्याय 10 के तालिका के अनुसार एबेर, पेलेग और योक्तान के दो दो पुत्रों का नाम है; लेकिन उनके बाद के वंशों का विस्तृत विवरण दिया गया है (10:25-31)। इसके ठीक विपरीत, अध्याय 11 की वंशावली यह बताती है कि एबेर के और भी पुत्र और पुत्रियाँ थीं (11:17) परंतु यह पेलेग और अब्राहम तक उसकी वंशावली का ही वर्णन करता है (11:16-26)। यह बात पाठकों को यह आश्वासन देता है कि परमेश्वर का मानव जाति को आशीष देने की प्रतिज्ञा किसी को भी निराश नहीं करेगी। अब्राहम के द्वारा ही सारे मानव जाति को आशीष मिलेगी "पृथ्वी के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे" (12:3)।

उत्पत्ति 11:10-32 में शेम की वंशावली का वृतांत (तेरह के वंश को मिलाकर), 5:3-32 में वर्णित शेत की वंशावली को पूरा करता है जिसमें उस चुने हुए परिवार का वर्णन है जिसके द्वारा परमेश्वर ने मानवजाति के इतिहास में अपने उद्धार के कार्य को पूर्ण करने की योजना बनाई है। अध्याय 11 की वृतांत अधिक संकुचित है, इसमें हर एक पीढ़ी के, जब तक यह तेरह तक नहीं पहुँच जाती, केवल उस पीढ़ी के मुखिया का ही नाम पाया जाता है। उसके पश्चात तेरह के तीन पुत्रों का नाम आता है: अब्राम (या अब्राहम), नाहोर और हारान। अब्राहम, जिसका नाम सबसे ऊपर वर्णित है, परिवार का सबसे महत्वपूर्ण सदस्य हो जाता है।

अध्याय 5 और 10 की भाँति अध्याय 11 में भी संख्या "10" और "7" अति महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए अध्याय 5 में आदम से लेकर नूह के तीन पुत्रों: शेम, हाम, येपेत तक, दस नामों की सूची है (5:32)। क्योंकि नूह, जलप्रलय पूर्व और जलप्रलय बाद मुख्य कड़ी है तो यह उचित लगता है कि अध्याय 11 उससे प्रारंभ किया जाए और शेम के वंश से प्रारंभ करके तेरह तक गिना जाए। यह

सूची भी तेरह के तीन पुत्रों: अब्राहम, नाहोर और हारान से प्रारंभ होकर तक दस पीढ़ियों में समाप्त होती है (11:26)।[10] यदि जलप्रलय के बाद नूह की गिनती नहीं होती है, तो अब्राहम, शेत की वंशावली में दसवें और आदम से बीसवें (10 x 2) स्थान पर आते हैं।[11] एबेर, जिससे इब्री लोग उत्पन्न हुए, से वह सातवें स्थान पर था और एबेर स्वयं आदम से चौदहवें (7 x 2) स्थान पर था।[12]

क्योंकि संख्या "7" पूर्णता तथा सिद्धता का प्रतीक है और यह तथ्य कि अब्राहम, एबेर से सातवें स्थान पर था तो यहाँ यह मेल खाता है कि वह एक महान "नाम" पाने वाला व्यक्ति हुआ (12:2)। परमेश्वर की ओर से ऐसा सिद्ध वरदान, जैसे कि महान "नाम" (ख्याति) पाने वाला, परमेश्वर की सिद्ध योजना की पूर्ति की ओर इशारा करता है, जिसके द्वारा "पृथ्वी के समस्त कुल" आशीष पाएंगे (12:3)। वह समस्त विश्वासियों का आत्मिक पिता बनने वाला था (रोमियों 4:11)। यह सारी बातें परमेश्वर को महिमा देने के लिए होने वाली थी। अब्राहम के बारे में ये विचार, बाबुल के लोगों, जिन्होंने बड़े घमण्ड के साथ अपने लिए, एक गुम्मट (मीनार) का निर्माण करके एक "नाम" कमाने की सोची, जो केवल स्व-महिमा का कारण था, के विपरीत थी (11:1-9)। बड़े नाम कमाने का प्रयास, असफलता में समाप्त हुआ और उन्होंने आने वाले पीढ़ियों के लिए केवल शर्म की नींव छोड़ी।

आयतें 10, 11. हव्वा को जो प्रतिज्ञा 3:15 में दी गई थी और नूह के उस वंशज के द्वारा जिसे इस प्रतिज्ञा को आगे बढ़ाना था और जिसका हमने उत्पत्ति में पहले भी चार बार अध्ययन किया है, अब इससे वह एक जाने पहचाने शीर्षक के साथ सम्बन्धित किया गया है। इस बार, यह **शेम की वंशावली** תּוֹלְדוֹת *(टोलडोथ)* की सूची प्रस्तुत करता है जो इस अध्याय के अंत में अब्राहम तक जाता है।

मूल पाठ यह कहता है कि जल प्रलय के दो वर्ष पश्चात जब **शेम एक सौ वर्ष का हुआ, तब उसने अर्पक्षद को जन्म दिया**। यह वाक्यांश उन लोगों के लिए कठिनाई उत्पन्न करता है जो यह सोचते हैं कि शेम नूह का ज्येष्ठ पुत्र था (10:21 की टिप्पणी देखें)। उत्पत्ति 5:32 और 7:6 के शाब्दिक अनुवाद के अनुसार नूह का ज्येष्ठ पुत्र 100 वर्ष का था जब पृथ्वी पर जलप्रलय हुआ, जबकि 11:10 के अनुसार शेम 98 वर्ष का था जब जलप्रलय समाप्त हुआ। इस भिन्नता को कैसे सुलझाया जा सकता है?

उत्पत्ति 5:32 का सामान्य अर्थ यह हो सकता है कि नूह ने शेम, हाम और येपेत को तब जन्म दिया जब नूह की अवस्था 500 वर्ष की हो चुकी थी (देखें NRSV; NIV)। यदि इस आयत को ऐसा ही समझा जाए तो इस समस्या को सुलझाया जा सकता है क्योंकि शेम उस समय जन्मा होगा जब नूह की अवस्था 502 वर्ष की थी; तब वह 100 वर्ष का हुआ होगा जब नूह की अवस्था 602 वर्ष की हुई जो जलप्रलय के दो वर्ष बाद की अवस्था है (देखें 7:6; 8:13)।

दूसरी संभावनाएं भी है। उत्पत्ति 11:10 में जो 100 वर्ष का वर्णन है वह एक पूर्णांक हो सकता है या 5:32 में जो 500 वर्ष का वर्णन है उसको भी इसी

भांति समझा जा सकता है। फिर भी, जब कोई 5:32 को अति शाब्दिक रूप से अनुवाद करते हैं तो उसने यह भी तर्क दिया होगा कि शेम, हाम और येपेत तिड़वां थे - लेकिन वचन में ऐसे संभावना का कोई आधार नहीं है।[13]

फिर भी, यदि येपेत नूह का ज्येष्ठ पुत्र था तो किसी प्रकार की आयु के आंकड़े में कोई गड़बड़ी नहीं है (10:21 की टिप्पणी देखें)। इस परिस्थिति में येपेत 100 वर्ष का रहा होगा जब पृथ्वी पर जलप्रलय आया और शेम 98 वर्ष का था जब जलप्रलय थमा। दूसरे शब्दों में, येपेत, शेम से दो या तीन वर्ष बड़ा रहा होगा। हाम तीनों भाइयों में सबसे छोटा रहा होगा (9:24)। यदि उनके जन्म के इस क्रम को लिया जाए तो उनके जन्म का क्रम येपेत, शेम और हाम होगा। सामान्य क्रम, जो शेम को इसमें प्रथम स्थान पर रखता है यह इसका धर्म विज्ञान है न कि जन्म का क्रम।

दूसरा, मूल पाठ यह कहता है कि अर्पक्षद के जन्म के पश्चात **शेम पांच सौ वर्ष जीवित रहा और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई**। 10:22 के अनुसार, शेम के चार पुत्रों में अर्पक्षद का तीसरा क्रम रहा होगा, इसलिए, वंशावली की प्राथमिकता परमेश्वर के इच्छानुसार थी, न कि कौन सा पुत्र पहले पैदा हुआ। इसके साथ ही शेम के बच्चे उसके 100 वर्ष की अवस्था में पैदा होना और 600 वर्ष की अवस्था में मृत्यु होना यह दर्शाता है वह उन लोगों के बीच एक कड़ी है जो जलप्रलय पूर्व और जलप्रलय के बाद रहे। उदाहरण के लिए, अध्याय 5 में, लोगों की सामान्य अवस्था 156 वर्ष की रही होगी जब उनके बच्चे पैदा हुए और मृत्यु तक उनकी सामान्य अवस्था 858 वर्ष था। अध्याय 11 में, जलप्रलय पश्चात लोगों की सामान्य अवस्था 43 वर्ष की हुई जब उनके बच्चे पैदा हुए और मृत्यु के समय उनकी सामान्य अवस्था 333 वर्ष थी।

आयतें 12, 13. अर्पक्षद 35 वर्ष का था जब **शेलह** उससे उत्पन्न हुआ और शेलह के पैदा होने के बाद वह 403 वर्ष तक जीवित रहा और उसकी कुल अवस्था 438 वर्ष की हुई (10:24 की टिप्पणी देखें)। जलप्रलय पश्चात, बापदादों की अवस्था घट गई, जिसमें अर्पक्षद का जीवनकाल (438 वर्ष) उसके पिता शेम की अवस्था (600 वर्ष) का दो तिहाई हुआ। कुछ लोग इसे मनुष्य के जीवनकाल के घटते क्रम के रूप में देखते हैं जो अब लगभग 120 वर्ष की हो गई (6:3 की टिप्पणी देखें)।

आयतें 14, 15. शेलह जब 30 वर्ष का हुआ तो उससे **एबेर** पैदा हुआ। इसके पश्चात शेलह 403 वर्ष तक जीवित रहा और उसकी कुल अवस्था 433 वर्ष की हुई (10:24 की टिप्पणी देखें)।

आयतें 16, 17. एबेर की अवस्था 34 वर्ष थी जब उससे **पेलेग** उत्पन्न हुआ। वह 430 वर्ष और अधिक जीवित रहा और 464 वर्ष की कुल अवस्था में उसका देहांत हुआ (10:24 की टिप्पणी देखें)। यहूदी लोग एबेर के वंशज हैं जिनसे उनको "इब्रानी" नाम मिला; जबकि वंशावली की सूची में उसको बहुत कम महत्व दिया गया है।

आयतें 18, 19. पेलेग जब 30 वर्ष का था तो उससे **रू** पैदा हुआ। वह 209 वर्ष और जीया और इस प्रकार उसकी कुल अवस्था 239 वर्ष की हुई (10:25 की टिप्पणी देखें)।

पेलेग से प्रारंभ करके देखें तो हमें यह मिलता है कि शेम के वंश के लोगों की आयु ज़बरदस्त तरीके से घट गई थी। पेलेग की आयु, उसके पिता एबेर की आयु से लगभग आधी थी। वह एबेर के वंशजों में चुने और बिन चुने हुओं के मध्य विभाजन का प्रतीक है। इन दो वंशों के बीच विभाजन, उनके व्यक्ति विशेष का उद्धार या दण्ड तय नहीं करता है बल्कि यहाँ इससे यह पहचान हो जाती है कि परमेश्वर किस वंशावली के द्वारा अब्राहम, इस्राएल और अंततः यीशु मसीह को इस संसार में लाएगा।

आयतें 20, 21. पेलेग के पुत्र **रू** पुराने नियम में केवल इसी संदर्भ में वर्णित है परंतु कुछ विद्वान उसको "रूएल" बताते हैं। एसाव के एक पुत्र का नाम भी रूएल था (36:4, 10, 13) और दूसरा रूएल, मूसा के ससुर भी थे (निर्गमन 2:18)। इस नाम का अर्थ "परमेश्वर का मित्र" भी हो सकता है। जब रू 32 वर्ष का था तो उससे **सरूग** पैदा हुआ और उसके पश्चात वह 207 वर्ष और जीया। अपने पिता पेलेग के समान जब वह 239 वर्ष का था तो उसका देहांत हो गया।

आयतें 22, 23. सरूग अपने आप में पेलेग का एक "वंशज" या "अनुज डाल" है। इसको हम इब्रानी शब्द שְׂרוּג *(सारीग)* से भी सम्बन्धित कर सकते हैं जिसका अर्थ "लता तंतु" या "टहनी" है।[14] सरूग, नियो-अश्शूर के सरूगी क्षेत्र से भी सम्बन्धित है जो उत्तर पश्चिम मेसोपोटामिया के प्राचीन हारान से लगभग पैंतीस मील के दूरी पर स्थित है।[15] 30 वर्ष की अवस्था में सरूग ने **नाहोर** को जन्म दिया और उसके पश्चात वह 200 वर्ष तक और जीवित रहा। सरूग की मृत्यु 230 वर्ष की अवस्था में हुई।

आयतें 24, 25. नाहोर ने 29 वर्ष की अवस्था में **तेरह** को जन्म दिया। उसके पश्चात वह 119 वर्ष तक और जीवित रहा और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी कुल आयु 148 वर्ष थी।

आयत 26. तेरह अंतिम व्यक्ति है जिसका इस भाग में परिचय दिया गया है। जब उसके बच्चे पैदा होने लगे तब वह 70 वर्ष का था। तेरह, **अब्राम, नाहोर और हारान का पिता था** और इस प्रकार वह इन तीनों व्यक्तियों के वंशजों का पूर्वज हुआ। वह 135 वर्ष और जीया और उसकी कुल अवस्था 205 वर्ष हुई, तत्पश्चात उसका देहांत हो गया (11:32)।

अब्राहम के दादा (11:24) और उसके एक भाई (11:26) का नाम भी "नाहोर" था। उत्तरवर्ती व्यक्ति ने बापदादों की कहानी में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (22:20-24; 31:53) और "नाहोर के नगर" का वर्णन 24:10 में पाया जाता है। कुछ विद्वानों ने इस नाम को नाहूर शहर से सम्बन्धित किया है जो प्राचीन पश्चिम एशिया के साहित्य के अनुसार हारान के निकट स्थित था।[16] "नाहोर के नगर" नाम से संभवतः कोई नगर नहीं था बल्कि इसका अर्थ यह है

कि वह नगर जहाँ नाहोर रहता था, और वह हारान था (11:31; 27:43; 28:10; 29:4)।

तेरह का परिवार (11:27-32)

अगला भाग बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अध्याय 1 से 11 के आदिकालीन इतिहास को अध्याय 12 से 50 तक के परमेश्वर के चुने हुए बापदादों के इतिहास से जोड़ता है। हमें यहाँ अब्राम या अब्राहम से परिचित कराया गया है जो बाइबल के इतिहास में केन्द्रीय स्थान रखता है जिससे परमेश्वर ने अपने आपको "अब्राहम का परमेश्वर" और उसके वंशजों का भी परमेश्वर करके परिचित कराया है (निर्गमन 3:6, 15)। पौलुस ने मसीहियों को "अब्राहम के पुत्र" करके संबोधित किया है (गला. 3:7)।

तेरह की वंशावली (11:27-30)

[27]तेरह की यह वंशावली है। तेरह ने अब्राम और नाहोर और हारान को जन्म दिया और हारान ने लूत को जन्म दिया। [28]और हारान अपने पिता के साम्हने ही, कस्दियों के ऊर नाम नगर में, जो उसकी जन्म भूमि थी, मर गया। [29]अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लीं: अब्राम की पत्नी का नाम तो सारै और नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था, यह उस हारान की बेटी थी, जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था। [30]सारै तो बांझ थी; उसके संतान न हुई।

आयतें 27, 28. तेरह की **वंशावली** תּוֹלְדוֹת *(टोलडोथ)* को छः संक्षिप्त आयतों में वर्णित किया गया है (11:27-32)। उत्पत्ति में तेरह का दोबारा वर्णन नहीं पाया जाता है क्योंकि संभवतः उसने अब्राहम के परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया। **अब्राम**, **नाहोर और हारान**, तेरह के पुत्र थे परंतु यह नाम उनके पैदा होने के क्रम में नहीं लिखे गए हैं। सूची में अब्राहम का नाम पहले आना इस बात का द्योतक नहीं है कि वह तेरह का पहलौठा था परंतु यह इसलिए है कि वह उत्पत्ति 12:3 में दिए गए प्रतिज्ञा को आगे बढ़ाता है। वक्त आने पर वह उन सभी विश्वासियों का पिता होगा जो उसके पद चिह्नों पर चलेंगे (रोमियों 4:12, 16)।

अब्राहम का भाई **हारान**, **लूत का पिता था। उसकी मृत्यु**, **उसके पिता तेरह के सम्मुख उनके पैतृक घर कसदियों के ऊर में हुई**। यहाँ और 11:31 में ऊर नगर का वर्णन, उत्तरी मेसोपोटामिया के ऊरफ़ा या अर्मेनिया के उरा नगर के विपरीत, फारस की खाड़ी के निकट दक्षिण पूर्व मेसोपोटामिया का भव्य नगर था। ईसा पूर्व तीसरी सदी में ऊर एक महत्वपूर्ण धार्मिक व राजनैतिक केन्द्र था। इसका एक महान राजा ऊर नम्मू था जो अपने कानून की व्यवस्था और 2100 में महान ईसा पूर्व ज़िगुरात के निर्माण के लिए जाने जाते हैं जिसके खण्डहर आज भी देखे जा सकते हैं।[17]

ऊर की पहचान "कसदियों का" शब्दांश के साथ करना संभवतः इस बात का द्योतक है कि यह उसी तरह के नाम वाले अन्य नगरों से इसको अलग पहचान देना था। उपलब्ध प्रमाण यह बताता है कि कसदी (अश्शूर कलदू) लगभग 1000 ई.पू. में, अब्राहम का इस क्षेत्र को छोड़ने के लगभग एक हज़ार वर्ष पश्चात, प्राचीन बाबुल के क्षेत्र में आए। यदि यह सत्य है तो "कसदियों का ऊर" शब्दांश अब्राहम के समय में या जब मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक लिखी होगी उस समय इस शब्दांश का प्रयोग नहीं होता था। तो इस कारण "कसदियों का" का शब्दांश बाद में किसी संपादक ने पवित्र आत्मा की अगुआई में जोड़ा होगा।

आयतें 29, 30. अब्राम और नाहोर दोनों ने ऊर में रहते विवाह किया। **अब्राम की पत्नी** का नाम **सारै** है जिसकी पहचान अब्राहम की आधी बहिन के रूप में की गई है (20:2, 5, 12)। वह **बांझ थी। नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था। वह हारान की बेटी थी**, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि नाहोर ने अपनी भतीजी से विवाह किया।

कालांतर में, आधी बहिन से विवाह करना मूसा की व्यवस्था में वर्जित किया गया (लैव्य. 18:9; 20:17; व्यव. 27:22), लेकिन चाचा का भतीजी से विवाह करना निषेध नहीं किया गया, जबकि भतीजे और चाची के विवाह को वर्जित किया गया (लैव्य. 18:14; 20:20)। इन दोनों संबंधों के विषय में कोई कारण नहीं दिया गया है लेकिन कुछ विद्वानों ने इसको ऐसा माना है कि पहली वाला संबंध अधिक मान्य रहा होगा क्योंकि संभवतः पुरूष, स्त्री से बड़ा था।

अब्राहम की पत्नी का मूल नाम "सारै" था किंतु बाद में उसका बदलकर "सारा" हो गया। इन दोनों नामों का रूप संभवतः שָׂרָה *(सारह)*, शब्द से आता है जिसका अर्थ "राजकुमारी" है जबकि मिल्का מַלְכָּה *(मलका)* शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है "रानी।" प्राचीन मेसोपोटामिया की अश्शूर की भाषा में, "सर्रातु चंद्रमा देवता सीन की पत्नी थी और मलकातु उसकी बेटी थी।"[18] "सारै" (सारा) और "मिल्का" नाम इसी प्रकार की अन्य जातियों की दंत कथाओं से लिया गया होगा, संभवतः यह यहोशु का वक्तव्य कि तेरह, अब्राहम और नाहोर ने परात महानद के उस पार रहते हुए "अन्य देवी देवताओं" की आराधना की, की पुष्टि करता है (यहोशु 24:2)। दोनों ऊर और हारान - बापदादों के प्राचीन घर - चंद्रमा देवता सीन के आराधना का गढ़ था। यह निश्चय इस बात से सम्बन्धित है क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम को उसके सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिवारिक संबंध तोड़कर, दोनों स्थानों को छोड़कर, कनान जाकर एक नई शुरूआत करने ने के लिए कहा था।

तेरह के परिवार का स्थानांतरण (11:31, 32)

[31]और तेरह अपना पुत्र अब्राम और अपना पोता लूत जो हारान का पुत्र था और अपनी बहू सारै, जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी इन सभों को ले कर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नाम देश

में पहुंचकर वहीं रहने लगा। 32जब तेरह दो सौ पांच वर्ष का हुआ, तब वह हारान देश में मर गया।

आयत 31. यह आयत वास्तव में यह नहीं बताता है कि परमेश्वर ने अब्राहम को कसदियों के **ऊर छोड़कर कनान देश में जाने को कहा**, यह ऐसा 15:7, नहेम्याह 9:7 और प्रेरितों के काम 7:2-4 में कहा गया है। इस समय, लेखक यह सोचता है कि उसके पाठकों को यह मालूम हो गया था कि परमेश्वर की बुलाहट हो चुकी थी; नहीं तो ऐसा कोई उचित कारण नहीं था जिसकी वजह से यह परिवार अपना पैतृक नगर छोड़कर इतनी लंबी यात्रा करके एक अज्ञात देश के लिए निकल पड़ते। उत्पत्ति 11:31 यह बताता है कि अब्राहम को जिस प्रकार परमेश्वर ने निर्देश दिया था कि वह अपने परिवार को छोड़कर जाए, इसलिए **तेरह** ने अपनी पितृत्व का अधिकार प्रयोग करते हुए, **अब्राम, लूत और सारै को साथ लिया ताकि वे कनान में प्रवेश कर सके**।

किसी कारणवश, यह परिवार तुरंत इस यात्रा को समाप्त करने में सफल नहीं हुआ। मूल पाठ यह बताता है कि **वे हारान नाम देश में पहुँचकर वहीं रहने लगे**। "हारान" उत्तर पश्चिम मेसोपोटामिया के फरात नदी के सहायक नदी पर बसा था। यह ऊर से कनान के दूरी के आधे से थोड़ा अधिक दूरी पर स्थित था।

आयत 32. यह परिवार **हारान में**, जब **तेरह की मृत्यु** 205 वर्ष की अवस्था में हुई तब तक वहाँ कई वर्षों तक रहा। अब्राहम तब परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए कनान देश को जाने के लिए निकला (12:1-3)।

तेरह की 205 वर्ष की अवस्था की तिथिबद्ध गिनती, कुछ समस्या खड़ी करती है। कुछ विद्वानों ने 11:26 की वक्तव्य को इस प्रकार समझा कि जब तेरह 70 वर्ष का हुआ तब अब्राहम पैदा हुआ। इस हिसाब तो जब अब्राहम के पिता तेरह का देहांत हुआ और जब अब्राहम ने हारान छोड़ा तो वह 135 वर्ष का था। फिर भी, 12:4 स्पष्ट रूप से यह कहता है कि जब अब्राहम हारान छोड़कर कनान के लिए निकला तो वह 75 वर्ष का था। इस समस्या को सुलझाने के लिए कई समाधान दिए गए हैं लेकिन यहाँ दो मुख्य समाधानों पर ही विचार किया जाएगा।

पहला समाधान 11:32 में मृत्यु के समय तेरह की आयु से सम्बन्धित है। जबकि MT यह बताती है तेरह 205 वर्ष का था लेकिन सामरी पेंटाट्युक यह बताती है कि वह 145 वर्ष का था। कुछ विद्वानों का मत है कि उत्तरवर्ती पाठ मूल पाठ है। यदि हम इसको मानें तो अब्राहम तब पैदा हुआ जब तेरह की आयु 70 वर्ष थी और जब तेरह की मृत्यु 145 वर्ष की अवस्था में हुई तो अब्राहम 75 वर्ष का रहा होगा। यह समाधान/तर्क इस समस्या का हल है लेकिन यहाँ यह संदेह व्यक्त किया जाता है कि सामरी पेंटाट्युक मूल पाठ है। वास्तव में, सामरी पेंटाट्युक की कई संख्याएं MT से अलग हैं जो अब्राहम के पैदा होने के समय तेरह की आयु को लेकर संदेह पैदा करता है।

इस समस्या का सबसे संभावित समाधान यह है कि अब्राहम, तेरह का पहलौठा नहीं था। यह आवश्यक नहीं है कि वंशालवली की सूची में नामों का क्रम उनके पैदा होने के क्रम में हों। पहलौठे होने के बजाय यह ऐसा हो सकता है कि धर्मवैज्ञानिक वरीयता के अनुसार लेखक ने व्यक्तियों का नाम, सूची में वरीयता के अनुसार पहले रखा होगा। इसलिए, 11:26 का सीधा अर्थ यह हो सकता है कि तेरह जब 70 वर्ष का हुआ तो उसके बच्चे पैदा हुए - संभवत: सबसे पहले हारान, जिसकी पहले मृत्यु हुई (11:28) - और अब्राहम तब पैदा हुआ जब उसके पिता की अवस्था 130 वर्ष की हुई। इस प्रकार तेरह की अवस्था उसके मृत्यु के समय 205 वर्ष की हुई और अब्राहम जब 75 वर्ष का हुआ तो उसने हारान छोड़ा।

अनुप्रयोग

बाबुल का गुम्मट (मीनार) (11:1-9)

हमने पाप का विस्तार आदम और हव्वा के आज्ञा के उल्लंघन से प्रारंभ होकर, प्रथम परिवार में हत्या और वहाँ से बढ़कर मनुष्य की दुष्टता के कारण जलप्रलय तक रेखांकित किया है। इन घटनाओं का क्रम मनुष्य का परमेश्वर से लगातार दूर होने को दिखाता है। मनुष्य ने लगातार अपने में परमेश्वर के स्वरूप को बिगाड़ा किंतु बाबुल के गुम्मट (मीनार) के निर्माण के द्वारा एक नाटकीय परिवर्तन आया। अब मानव जाति का पाप अग्रज नहीं है; अब लोगों का परमेश्वर के प्रति टेढ़ी सोच प्रकट हो चुकी है। नूह के कई वंशज - नैतिक तथा आत्मिक रूप से दिवालिया हो चुके थे - वे धार्मिक तथा धर्मवैज्ञानिक रूप से उजड़ चुके थे। उन्होंने परमेश्वर के सच्चे प्रकृति की वास्तविक समझ को खो दिया था। इस हद तक उत्पत्ति के लेखक ने पाप के विस्तार और नैतिक पतन का वर्णन किया है; परंतु बाबुल का गुम्मट (मीनार) की कहानी, परमेश्वर के प्रति प्रचलित विकृत धारणा प्रस्तुत करती है।

निर्माणकारियों का घमण्ड।

1. गुम्मट (मीनार) निर्माणकारियों का पाप घमण्ड था, जिसने लोगों को परमेश्वर का वचन न मानने के लिए प्रेरित किया (11:1, 2, 4)। जलप्रलय पश्चात नूह के परिवार वालों ने एक ही भाषा बोला। पूर्व की ओर यात्रा करते हुए वे शिनार के मैदान (प्राचीन बाबुल का क्षेत्र) में आकर बस गए। उस स्थान पर एक साथ ठहरने के बाद उन्होंने आपसी एकता बनाने का प्रयास किया। परमेश्वर के विरूद्ध बलवा के कारण यह निर्णय लिया गया, जिसने उन्हें यह आदेश दिया था कि "फूलो फलो और पृथ्वी भर में फैल जाओ" (9:1; देखें 9:7)। स्पष्ट रूप से, विभाजन का बीज उनके मध्य पहले ही पनप चुका था और उन्हें ऐसा लगा कि "सारी पृथ्वी पर फैलने" का खतरा उनके सिर पर मंडरा रहा है (11:4)। अपने घमण्ड के कारण उन्होंने सोचा कि वे परमेश्वर की इच्छा को इस योजना के द्वारा निष्फल कर देंगे ताकि वे अपनी विघटनकारी भावनाओं के बावजूद एक साथ

एकता में बने रहें। यहाँ एक पाठ यह सीखा जा सकता है कि एकता, परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करने नहीं बल्कि केवल उसके प्रति आज्ञाकारी रहने से ही प्राप्त किया जा सकता है। एकता में बने रहने का प्राथमिक अवयव सच्चाई में पवित्रीकरण है (देखें यूहन्ना 17:17-21)। बुद्धिमान ने कहा, "मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है" (नीति. 19:21)।

2. लोगों की अहंकारी महत्वाकांक्षा को उनकी प्रतिभा से बल मिला था। उन्होंने एक नगर और एक विशाल गुम्मट को बनाने की पहल की जो आकाश तक पहुँचे। इस प्रयास के लिए निस्संदेह समय की पर्याप्त अवधि पर लोगों के एकजुट प्रयासों की ज़रूरत थी। क्योंकि महानदी के उपजाऊ मैदान में पत्थर नहीं थे, उन्होंने ईंटों के लिए घास फूस और गारे को लिया और उन्हें आग में पकाया। तब उन्होंने वास्तविक निर्माण कार्य आरम्भ किया (11:3, 4)।

निम्रोद इस घटना को भड़काने वाले के रूप में पहचाना गया क्योंकि उसको "पृथ्वी पर पहले शूरवीर" का नाम दिया गया और क्योंकि हम पढ़ते हैं कि "उसके राज्य का आरम्भ बाबुल देश से हुआ था" (10:8, 10)। परन्तु, निम्रोद के बाबुल बनाने की सफलता का वर्णन बाद में स्पष्ट रूप से मिलता है; 11:1-9 के निर्माण करने के प्रयास विफल हो गए थे, और लोग आस पास के देशों में फैल गए। यह सम्भव है कि निम्रोद उसका मूल निर्माणकर्ता था और परमेश्वर के द्वारा उसके पहले के प्रयासों को विफल करने के कुछ समय बाद वह लौट आया। भले ही बाद में वह बाबुल और अन्य नगर मेसोपोटामिया को बनाने में सफल हो गया। बाबुल या बेबीलोन नगर, जिसका निर्माण कार्य बाद में आखिरकार ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी में राजा नबूकदनेस्सर की अधीनता पूरा हुआ, जो पहले कोई नहीं कर पाया: प्रसिद्धि और अभिमान। प्राचीन पूर्वी देश के विजेता होने के नाते, बाबुलवासियों ने सच्चे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह सिंहासन के रूप में इस नगर की स्थापना की और झूठे देवताओं की पूजा की (दानिय्येल 3; 4)।

3. अहंकार ने निर्माणकर्ताओं को आत्म-महिमा और प्रसिद्धि के लिए प्रेरित किया। वह अपने लिए "अपना नाम करना" चाहते थे (11:4)। कुछ लोग ऐसा विचार भी करते हैं कि वे इतना ऊँचा गुम्मट बनाना चाहते थे कि बाढ़ का जल उन तक न पहुँच सके; परन्तु यह उनका उद्देश्य था तो निश्चय ही इसे मैदान में बनाने की बजाए पहाड़ी की चोटी पर बनाने की प्राथमिकता दी होती। अन्य लोग ऐसा भी विचार करते हैं कि वह गुम्मट शक्तिशाली शत्रुओं से सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया था। बाद में गुम्मटों के स्थान पर घेराव और टक्कर से सुरक्षा के लिए शक्तिशाली दीवारों को बनाया गया। परन्तु, इस गुम्मट का कथित उद्देश्य लोगों को एक साथ एकता और बल में रखना था ताकि भविष्य में कोई शत्रु उन्हें धमका न सके। अन्ततः उनके सभी प्रयास विफल हुए और वे पृथ्वी पर दूर-दूर तक फैल गए।

इस्राएली लोगों के लिए एक शिक्षा जिन्होंने पहली बार इस कहानी को पढ़ने का इरादा किया बिलकुल स्पष्ट है: एक जाति के रूप में बने रहने के लिए,

उनको परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होना है और इसके विरुद्ध नहीं होना है। मूसा ने इस्राएल को वाचा के श्रापों के प्रति सावधान किया जो उन पर आएंगे यदि वह यहोवा के प्रति विश्वासघाती बने। इन श्रापों में उनके शत्रुओं से पराजय और प्रतिज्ञा के देश को गँवाना सम्मिलित था, इसके अतिरिक्त पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक बिखरना था (व्यव. 28:15-68)। समस्या जिसने बाद में इस्राएल को कष्ट दिया वही थी जो बाबुल के निर्माण कार्य पर विनाश को लाई अर्थात अहंकार। बुद्धिमान ने लिखा, "विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमंड होता है" (नीति. 16:18; देखें 18:12)। यीशु ने वही सच्चाई को सिखाया: "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा" (मत्ती 23:12)।

यह सिद्धान्त न केवल अकेले व्यक्तियों पर लागू होता है परन्तु यह नगरों और देशों पर भी लागू होता है। हम लोगों के संसार में जीवन व्यतीत करते हैं जो बड़े-बड़े नगरों में भीड़ की भीड़ हो रही है, फिर भी वे कभी भी अकेले नहीं रहे हैं। अंतर्निहित चिन्ता, वियोग और असंतुष्ट होने की भावना लोगों की अपनी आत्म पहचान के भाव को खो देने का कारण बनते हैं। इस पहचान को फिर से प्राप्त करने की इच्छा साहसी कारनामों को करने की ओर या लम्बे समय तक कठिन परिश्रम करने की विवशता की ओर ले जा सकती है; यह कुछ लोगों को प्रसिद्धि पाने के प्रयास में शर्मनाक कामों के द्वारा कौतुक करने की ओर ले जाती है। निराश जीवन अपनी ख्याति को प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने के विचार से केन्द्रित होंगे, चाहे साधन उचित या अनुचित हों। परन्तु इस तरह की ख्याति शीघ्र ही फीकी पड़ जाती है क्योंकि इसमें वास्तविक सुरक्षा नहीं होती अर्थात मात्र अकेलापन, कड़वाहट और खालीपन होते हैं। वेस्टमिंस्टर विश्वास का अंगीकार कहता है, "मनुष्य का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और उसमें हमेशा आनंदित रहना है।"[19] जब तक लोग और देश अपनी ही महिमा की तलाश करेंगे वे व्यर्थ जीवन की असुरक्षा में लगातार अपने आपको गँवाते रहेंगे।

उनके विद्रोह के लिए परमेश्वर का प्रत्युत्तर।

1. परमेश्वर ने मनुष्यों के अहंकार, विद्रोही कार्यों के लिए दृढ़ उत्तर दिया। उसने बाबुल के पापी मनुष्यों के अक्खड़ कामों की जाँच की (11:5)। यह कथन कि "नगर और गुम्मट को देखने के लिए यहोवा उतर आया" सरल भाषा का प्रयोग करता है, मानवीय विचार और भाव के ढंग के साथ परमेश्वर के कार्यों को चित्रित किया गया है। मानवीय मामलों में रुचि और सहभागिता दिखाने के लिए यह साहित्यिक तकनीक को उसके हस्तक्षेप को नाटकीय दृश्य बनाने के लिए प्रयोग किया गया है। उनके कार्य को देखने के लिए परमेश्वर के नीचे उतरने की कल्पना उनके कार्यों के प्रति परमेश्वर के पूर्वज्ञान को प्रकट करती है। निस्संदेह परमेश्वर उनके कार्य को देखने के लिए सचमुच नीचे नहीं उतरा था। एक और परिच्छेद में भी इसी बात पर बल दिया गया है, जहाँ वह इसी प्रकार के विद्रोह का प्रत्युत्तर देता है। भजन 2:4 कहता है, "वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसेगा,

प्रभु उनको ठट्ठों में उड़ाएगा।" अन्य शब्दों में, परमेश्वर मनुष्य की प्रत्येक योजना और कार्य को भली भांति जानता है, जैसे कि वह निश्चित रूप से जानता था कि आदम और हव्वा कहाँ छिपे थे और उन्होंने पहले क्या किया था जब उसने उनके पाप के प्रति प्रश्न किया (3:9, 13)। यही बात वहाँ भी सत्य थी जब परमेश्वर ने कैन से हाबिल के विषय में पूछा था (4:9, 10)। उसी तरह से वह बाबुल के लोगों के कार्यों को और उनके हठीलेपन को जानता था, जिससे वे प्रेरित हुए थे (देखें भजन 139:1-6)।

2. परमेश्वर सामूहिक सिद्धान्त त्याग के खतरे से अवगत था (11:6, 7)। यदि मानवजाति को एक साथ रहने, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने की एकता में रहने दिया जाता, तो लोगों में एक झूठे बल का भाव पनपने लगता वह उन्हें परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही और अनाज्ञाकारिता के बड़े-बड़े कृत्यों की ओर ले जाता। एक प्रकार से, एक गुम्मट को बनाना जो आकाश तक पहुँच जाए, बाबुल के लोग स्वर्ग के फाटकों पर धावा करने का प्रयास कर रहे थे। अभी भी वे परमेश्वर के द्वारा दी गई सीमाओं को लांघने का प्रयास कर रहे थे, वह उस वस्तु को छीनना चाहते थे जो उनकी नहीं थी, और परमेश्वर के द्वारा निर्धारित की गई सीमाओं को ग्रहण नहीं कर रहे थे। एक समाज के रूप में, उन्होंने परमेश्वर की पवित्रता और श्रेष्ठता का तिरस्कार किया, आकाश और पृथ्वी की बीच में आवश्यक विभाजन का भी।

बाबुल के लोगों का भयानक पाप - जैसा आज के मनुष्यों का है - जो परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में जानने में विफल हो रहे हैं। निर्बल और पापी मनुष्य होने के नाते, हम कभी-कभी व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से अपनी ही शर्तों पर उससे मिलने का या उसका स्थान लेने का प्रयास करते हैं। जब से अदन के बाग में पाप हुआ है, मनुष्य की सबसे बड़ी परीक्षा स्वयं ईश्वर के समान बनने की रही है।

पाप की जड़ अहंकार है, जो विद्रोह की ओर ले जाता है; और यह विद्रोह अन्ततः परमेश्वर के प्रभुत्व के विरुद्ध है। अहंकार परमेश्वर रहित मानवीय स्वायत्तता का अभिकथन है, आकाश और पृथ्वी के सृजनहार पर निर्भर रहने की और उसके प्रति अधीनता से इनकार। बाबुल का गुम्मट मनुष्य की महानता को प्रदर्शित करने के लिए वास्तुकला सम्बन्धी एक उपलब्धि थी। इसकी सफलता ने बनाने वालों को सुरक्षा की झूठी भावना और उनके परम स्थान पर नियन्त्रण दे दिया होता।

कुछ न कुछ उसी तरह से, आज लोग सैन्य बल में, वैज्ञानिक उपलब्धियों में और तकनीकी विकास में भरोसा करने के लिए प्रलोभित किए जाते हैं। ऐसा लगता है कि यह शान्ति, सुरक्षा और परमेश्वर से अलग जीवन की दीर्घायु की कुछ मात्रा प्रदान करते हैं। हमारे जीवन के कई क्षेत्रों में हम आधुनिक विकास के आभारी हो सकते हैं; परन्तु, हमें इस बात से सचेत होना चाहिए कि हम भ्रमित होकर इन बातों से अपने को ईश्वर न समझें। मनुष्य अपनी रचनात्मक प्रतिभा से

स्वर्ग में कभी भी नहीं चढ़ सकता। कोई व्यक्ति जितना अधिक परमेश्वर बनने का प्रयास करता है उतना ही अधिक वह शैतान बनता जाता है।

3. बाबुल के लोगों पर परमेश्वर का दण्ड आ पड़ा। परमेश्वर ने उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दी और "उनको आस पास के क्षेत्रों में बिखरा दिया," उनकी एकता के विद्रोही प्रयास को उलट दिया (11:7-9)। परन्तु, इस घटना में परमेश्वर की दया भी प्रत्यक्ष थी। एक बार फिर, जैसा आदम और हव्वा, कैन और जलप्रलय पूर्व संसार के वर्णन में, हम गुम्मट की उस घटना में परमेश्वर के अनुग्रह को देखते हैं। जबकि "पाप की मज़दूरी [दण्ड अर्जित किया हुआ] मृत्यु है" (रोमियों 6:23; देखें उत्पत्ति 2:17), पूरे इतिहास में परमेश्वर ने उन लोगों को पश्चाताप के अवसर प्रदान किए जो जीवन में मृत्यु के अधिकारी थे। परमेश्वर किसी व्यक्ति के साथ जब वह इस जगत में है इसके दौरान अपने सारे हिसाब किताब को नहीं निपटाता है। वह पापी मानवता के प्रति धीरज रखता है, हमेशा पश्चाताप का बुलावा देता है, ताकि जिनको उसने बनाया है वह हमेशा के लिए नाश न हों (2 पतरस 3:9-13)।

परमेश्वर ने बाबुल के प्राचीन लोगों को प्रत्युत्तर देने के लिए दबाव नहीं डाला, आज अपनी आज्ञा मनवाने के लिए वह लोगों को विवश नहीं करता है। सम्पूर्ण बाइबल में ज़बरदस्त संदेश है कि परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है। वह उनको नाश नहीं करना चाहता परन्तु उन्हें बचाना चाहता है। उसके दिव्य प्रेम का सर्वोत्तम स्तर यीशु मसीह में प्रदर्शित हुआ (यूहन्ना 3:16-22; 5:24-29)। यहाँ तक कि पौलुस ने ऐसा कहा कि "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए" (2 कुरि. 5:10), उसने मुख्य रूप से यह भी कहा कि "परमेश्वर की दया" मनुष्य को मन फिराव की ओर ले जाती है (रोमियों 2:4-8)।

समाप्ति नोट्स

[1]*द क्रिएशन एपिक* 6.52, 54, 58, 75. [2]सुमेर की यह कहानी "एनमरकार एण्ड द लॉर्ड आफ अर्राटा" कहलाती है। इस लेख का अनुवाद के लिए देखें विलियम डब्ल्यु. हल्लो, संपादक, *द कॉंटेक्स्ट आफ स्क्रिपचर* (बॉस्टनः ब्रिल, 2003), 1:547-50. [3]गॉर्डन जे. वेनहैम, *जेनेसिस 1-15*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वोल्यूम 1 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 236-37. [4]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर और चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्शीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (आक्सफोर्डः क्लैरेंडन प्रेस, 1962), 869. [5]देखें 10:10; 11:2, 9; यशा. 11:11; दानियेल 1:2; जकर्याह 5:11. LXX यशायाह 11:11 "शिनार" का अनुवाद "बाबुल" करता है और जकर्याह 5:11 "बाबुल का देश" अनुवाद किया गया है। [6]हिरोडोटस, *हिस्ट्रीज* 1.181. [7]देखें उत्पत्ति 6:4, जहाँ "शूरवीर" शाब्दिक रूप से "कीर्तिमान लोग" जिसका तात्पर्य यह है कि उन्होंने हिंसा और उपद्रव में बड़े नाम कमाए थे (6:5, 11)। यह भावाव्यक्ति, प्रसिद्ध बनने की ओर ईशारा करता है लेकिन यह उसकी मंशा पर निर्भर करता है और उस कार्य के लिए भी कि क्या वह भले या बुरे के लिए है (देखें 2 शमूएल 8:13; नहेमाय. 9:10; यिर्म. 32:20)। उत्पत्ति 6:4 की मंशा परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है। [8]जैफरी एस. रोजर्स, "बाबेल, टावर आफ," *एडमैंस डिक्शनरी आफ बाइबल,*

संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (ग्रैंड रैपिडस, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2000), 1:38. [9]डेविड एफ. पेन, "बाबेल, टावर आफ," *दि इंटरनेशनल स्टैन्डर्ड बाइबल एनसाइक्लोपिडिया*, रिवाइज्ड एडीशन, संपादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिडस, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 1:382. [10]अध्याय 11 में नूह का नाम नहीं पाया जाता है; फिर भी, मत्ती ने इस विधि का प्रयोग किया जब उसने यकुन्याह को दो बार गिनाः एक पीढ़ी के समाप्त होने पर और दूसरी पीढ़ी के प्रारंभ होने पर (मत्ती 1:11, 12)।

[11]लूका 3:34-38 में अब्राहम को आदम से इक्कसीवें पायदान पर रखा गया है, क्योंकि वंशावली हमेशा एक जैसे नहीं गिनी जाती थी। वे बहुधा चुनाव पर आधारित होती थी और जब नाम अधिक महत्वपूर्ण नहीं होते थे तो उनको छोड़ दिया जाता था। [12]केनेथ ए. मैथ्यू, *जेनेसिस 1-11:26*, द न्यू अमेरिकन कमेन्ट्री, खण्ड 1A (नैशविलाः ब्राडमैन एण्ड हॉलमैन पब्लिर्श, 1996), 488 में वंशावली की चार्ट देखें। [13]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टीन, टेक्सासः स्वीट पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 200. [14]ब्राऊन, ड्राइवर एण्ड ब्रिग्स, 974. [15]रिचर्ड एस. हेस्स, "सेरूग," *दि एंकर बाबल डिक्शनरी*, संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992), 5:1117-18. [16]योशीटाका कोबायाशी, "हारान," *दि एंकर बाबल डिक्शनरी*, 3:58. [17]ऊर की ज़िगुरात की तस्वीर और बाबुल में ज़िगुरात की पुनः निर्माण की तस्वीरें जॉन एच. वाल्टन, "जेनेसिस," *जॉडरवैन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राऊंड कमेंट्री*, खण्ड 1, *जेनेसिस, एक्सोडस, लेविटीकस, नंबर्स, ड्यूट्रेनोमी,* संपादक जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः जॉडरवैन, 2009), 61-63. [18]वेनहैम, 273. [19]*दि वेस्टमिंस्टर कनफैशन ऑफ फेथ*, भूमिका और नोट्स के साथ द्वारा जोहन मैकफर्ससन (एडिनबर्गः टी & टी. क्लार्क, 1881), 123.